तेज़े से पत्र

hindi

पहली बार यूरोपीय बैठक बर्लिन में हो रही है । बर्लिन एक ऐसा शहर है जो विविधताओं के लिए विख्यात है । यह भविष्य की ओर उन्मुख जरूर है पर बीते यादों को समावेश करने का प्रयास भी करती है । यह एक ऐसा शहर है जहाँ के लोग यह साबित किये हैं कि वे कठिन परिस्थितियों में भी नहीं घबराएँगे ।
यहाँ अल्पसंख्यक खीस्तीय सुसमाचारीय जीवन जीने का प्रयास करते हैं । समाज में दूसरे समुदायों के साथ उनका सामूहिक साक्ष्य, एकतावर्द्धक सहभागिता, एक विकल्प नहीं किन्तु अति आवश्यक कदम है । बहुत सारे पारिश एवं धार्मिक संस्थाएँ मानवीय एकता का ऐसा जगह है जहाँ गरीबों को स्वागत किया जाता है ।
बर्लिन में **'टेजे'** ब्रदर का प्रथम आगमन 1955 में हुआ । 1961 ई० में जब शहर को दो भागों में बांटता हुआ दीवाल बना तब टेजे ब्रदर्स पूर्वी बर्लिन जाया करते थे । वहाँ 1980 के आस-पास बहुत सारे प्रार्थना समूहों का निर्माण किया गया । 1986 ई० में ब्रदर रोजर रंगमंच के लिए 'विश्वास की यात्रा' में गये । यहाँ कम्यूनिष्ट अधिकारियों से प्रार्थना सभा करने के लिए अनुमति की आवश्यकता थी । प्रार्थना सभा दो बड़े गिरजाघरों में एक साथ कैथोलिकों एवं प्रोटेस्टेंटो के लिए होता था । यह करीब 6000 युवक-युवतियों को पूर्वी जर्मनी में एक साथ लाया । अनुमति एक शर्त पर दिया गया कि पश्चिम जर्मनी से कोई प्रतिभागी यहाँ नहीं आये । वह समय अब बीत गया । बर्लिन अब उन लोगों के लिए एक चिन्ह बन गया है जो पूरे संसार में विश्वास की स्थापना के लिए विभाजित दीवार को पार करने का प्रयास करते हैं ।

नयी एकात्मकता की ओर

मनुष्यों के बीच परिवार में, समुदाय में, शहरों, गाँवों, राष्ट्रों, महाराष्ट्रों के बीच एक नयी एकात्मकता प्रस्फुटित करने के लिए एक साहसपूर्ण निर्णय की आवश्यकता है ।(1)
यह जानते हुए कि खतरा और वेदना मानवता और भूमंडल पर बोझ डालता है हम लोग इसे डर में नहीं त्यागना चाहते हैं ।(2) फिर भी एक अच्छी मानवीय आशा को मोह से डराया जा रहा है । आर्थिक समस्याएँ जो लगातार बोझ बनती जा रही है, अत्यधिक समाज की जटिलताएँ, प्राकृतिक अपदाओं के कारण आशाहीनता, ये सभी आशा की नयी कली को दबा देना चाहते हैं ।(3)
नये समाज के निर्माण के लिए विश्वास रूपी स्रोत को खोलने का समय आ गया है ।
विश्वास के बिना न तो मनुष्य और न समाज जीवित रह सकता है । जब विश्वास को धोखा दिया जाता है तो इसके द्वारा हुआ घाव गहरा छाप छोड़ जाता है।
विश्वास भोला-भाला अंधा नहीं और न ही कोई सहज शब्द है । यह तो चुनाव का परिणाम और आंतरिक संघर्ष का फल है । प्रतिदिन एक बार हम चिंतामुक्त विश्वास की ओर बुलाये गये हैं ।

मानव समुदाय के बीच विश्वास

अत्यधिक आवश्यकता का प्रत्युतर है विश्वास का द्वार । यद्यपि आज संप्रेषण सरल होते जा रहे हैं फिर भी मानव समाज सीमित एवं विभाजित है ।

1)यद्यपि मानवीय एकात्मकता की आवश्यकता हमेंशा से रही है फिर भी इसे नये तरीकों से व्यक्त करके नवीकरण करने की आवश्यकता है । आज नयी पीढ़ी के लिए महाराष्ट्रों के बीच एवं देश के अंदर पृथ्वी के खनिजों का उचित बंटवारा, धन का सामान वितरण करने की आवश्यकता है जो शायद पहले इतिहास में कभी इसकी आवश्यकता नहीं हुई ।
2)एक संवेग नयी एकात्मकता की ओर संभव है । दृढ़ धारणाओं से यह साबित है कि विश्व इतिहास पूर्वनिर्धारित नहीं है । आइए कुछ उदाहरणों को हम याद करें । द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कुछ चुनिन्दे राजनैतिक नेतागण, आशाओं के विपरीत आशा करके, मेलमिलाप में विश्वास करके, साहस पूर्वक एक होकर, यूरोप का निर्माण करना शुरू किये । 1986 ई० में शाँतिपूर्ण आन्दोलन फिलीपीन्स में महान परिवर्तन लाया । एक महान परिष्कृत विख्यात आन्दोलन ￼ैवसपकंतदवेम६ तैयार किया गया । बिना खून-खराबे के विभिन्न यूरोपीय देशों को आजादी, 1989 में 'बर्लिन दीवार' का पतन जो कुछ वर्षो पूर्व हुआ, कल्पना से परे है। इसी समय दक्षिणी अमेरिकी देश प्रजातंत्र की राह पर चलने लगे और आर्थिक उन्नति करने लगे, इससे यह आशा की जा रही है कि अविलम्ब गरीब भी इससे लाभान्वित होंगे । दक्षिणी अफ्रीका में पृथग्वासन का अंत और नेलसन मंडेला का हाथ आशाओं के परे मेल-मिलाप कराया । फिलहाल में हमलोगों ने उत्तरी आयरलैंड और बास्क देशों में राजनीति हिंसा का अंत का साक्ष्य दिया है ।

3)उभरता वैश्विक अर्थव्यवस्था हमारे लिए कई प्रश्न रखता है । भूराजनैतिक स्थिरता की शक्ति बदल रही है । असमानताएँ बढ़ रही हैं । कल की सुरक्षा आज हमारे हाथ में नहीं है । क्या यह हमारे जीवन के चुनावों पर और अधिक सोचने का कारण नहीं बनता है ?

दीवारें न सिर्फ मनुष्यों एवं राष्ट्रों के बीच स्थित है बल्कि हमारे बिल्कुल नजदीक और हमारे हृदयों में भी स्थित है । गौर कीजिए विभिन्न राष्ट्रों के बीच की पूर्वधारणाएँ । सोचिए अप्रवासी लोगों को, वे नजदीक रहकर भी बहुत दूर हैं । अलग-अलग धर्म एक दूसरे से अनभिज्ञ हैं । ख्रीस्तीय अपने आप विभिन्न समुदायों में विभाजित हैं ।

विश्व शाँति हमारे हृदयों में शुरू होती है । एकात्मकता की शुरूआत के लिए हमें दूसरों के पास जाना होगा । कभी-कभी खाली हाथ जाना होगा, उनसे सुनना होगा, कभी उन लोगों को भी समझने की कोशिश करनी होगी जो हमारी तरह नहीं सोचते हैं, और तब हम मृतप्राय परिस्थिति को बदल सकते हैं ।

आइए बेरोजगार और कमजोर बेसहाय लोगों के प्रति एकाग्र होने की कोशिश करें । हम गरीबों के प्रति अपनी सहानुभूति, सामाजिक कार्यों में सहभागी होकर कर सकते हैं । इससे भी अधिक सहभागी हम अपने खुले व्यवहार से कर सकते हैं । हमारे पड़ोसी भी किसी न किसी रूप में गरीब हैं और उन्हें हमारी आवश्यकता है ।(4)

गरीबी और अन्याय की परिस्थिति में कोई संघर्ष करते समाप्त हो जाते हैं तो कोई उद्देश्यहीन हिंसा के परीक्षा में पड़ जाते हैं । हिंसा समाज परिवर्तन का रास्ता नहीं है ।(5) लेकिन हमें उन जवान लोगों को सुनना होगा जो इसके मूल कारणों को जानने के लिए अपने क्रोध को प्रकट करते हैं ।(6)

दृढ़ विश्वास जैसे आपसी विचारों का आदान प्रदान के द्वारा नयी एकात्मकता की पहल का परिपोषण होता है ।(7) यह एक तरीका है जो विभिन्न धर्मों के लोगों, विश्वासियों एवं अविश्वासियों को एक साथ ला सकता है ।

ईश्वर में विश्वास

मनुष्यों के बीच एकात्मकता ईश्वर में एक मजबूत आधार रख सकता है, फिर भी ईश्वरीय विश्वास को बार-बार प्रश्न किया जाता है ।

बहुत सारे विश्वासियों को अपने कार्य-स्थल या पढ़ाई का स्थान कभी-कभी अपने परिवार में इसकी नकारात्मक अनुभव हुई है ।

बहुत सारे लोग एक ईश्वर में विश्वास नहीं कर पाते हैं जो उन्हें व्यक्तिगत रूप से प्यार करता है । बहुत सारे ऐसे भी हैं जो ईमानदारी से यह प्रश्न पूछते हैं, यदि मेरे पास विश्वास है तो मैं कैसे जान सकता हूँ ?

आज विश्वास जोखिम के रूप में प्रकट होता है । विश्वास का मतलब सिर्फ सच्चाई से चिपकना नहीं, वरण यह तो ईश्वर से एक संबंध है ।(8) यह हमें ईश्वर के प्रकाश की ओर लौटने के लिए प्रेरित करता है ।

चापलूसिता या व्यक्तिगत लाभ के लिए हठधर्मिता से दूर,(9) ईश्वर में विश्वास हमें डर से और उन लोगों के लिए हमारा सेवा का जीवन को स्वतंत्र कर देता है जिनको ईश्वर हमें देता है ।(10) जैसे-जैसे ईश्वर में हमारा आस्था बढ़ते जाता है हमारा हृदय भी पूरे विश्व में सभी जगह और सभी संस्कृति में, जो मानवता का गुण है, धारण करने के लिए फैलते जाता है । हमारा हृदय विज्ञान एवं शिल्प विज्ञान को जो दुखों को कम करता है, समाज को आगे बढ़ने में मदद करता है, स्वीकार करने के योग्य बन जाता है ।

ईश्वर, सूर्य के समान इतना चमकीला है कि हम उसे देख नहीं पाते, लेकिन येसु ईश्वर के प्रकाश को प्रकाशित करते

4) गरीबी का संबंध आर्थिक या भौतिक जीवन से केवल नहीं है, मित्रों की कमी, जीवन का अर्थ खोजने में असमर्थ, कविताएँ, संगीत, कला जैसे धनों की कमी - इत्यादि का सामन्जस्य है गरीबी , जो हमें प्राकृति की सुन्दरता में समाहित करती है ।

5)1989 में बर्लिन दीवार के पतन के पूर्व संध्या पर पूर्वी जर्मनी में स्ट्रीट प्रर्दशन के आयोजकों ने प्रत्येक को एक जलती मोमबत्ती पकड़ने को कहा । एक हाथ में मोंम पकड़ने एवं दूसरे हाथ से इसे हवा से बचाने के कारण हिंसा के लिए कोई हाथ खाली नहीं बचा ।

6) मैडरिड में प्दकपहदंकवे आन्दोलन में शामिल एक युवा स्पेनवासी ने मुझको लिखा - "यदि हालात नहीं सुधरते हैं तो च्छ भी हो सकता है । बहुत सारे लोग बेरोजगार हैं । वे अपना घर और मानवीय अधिकारों को खो रहे हैं । अवैध कानून, आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था, झूठी प्रजातंत्र जो नागरिकों के अधिकारों जैसे मकान, शारीरिक एवं मानसिक समन्वय जो संविधान में वर्णित है, प्रतिभूत नहीं करती, जिसके कारण लोग अत्यंत अस्तव्यस्त और गुस्से में हैं । ..आपने पूछा ज्प्रम हमारे लिए क्या कर सकता है । हमारा जवाब है - तुम वही कर

7)समझने के लिए उदाहरणस्वरूप, पश्चिमी देश इतने तैयार नहीं हैं कि वे अफ्रीका को मानवीय सहायता प्रदान करें ताकि वहाँ न्याय व्यवस्थित हो । यही चीज दूसरे देशों के साथ भी सच है जैसे हैती । आत्मसम्मान एवं दृढ़ विश्वास के बावजूद हैती लोगों के साथ इतिहास में सबसे ज्यादा दुर्व्यवहार और अपमान किया गया है ।

8) संत पापा बेनेदिक्त सोलहवें ने बहुत बार जोर देकर कहा है कि ईश्वर से व्यक्तिगत संबंध ही विश्वास का आधार है । उदाहरण के लिए, उन्होने लिखा - "ख्रीस्तीय होना नैतिक चुनाव या उच्च विचार का परिणाम नहीं है लेकिन किसी घटना या व्यक्ति से मुलाकात का परिणाम है, जो जीवन को एक नयी क्षितिज और निर्णायक निर्देश देती है"। (Benedict XVI Deus Caritas est, Introduction, No 1)

9) हमारे विश्वास को लगातार बहिर्वेशन और डर, कभी-कभी संदेह और विश्वास के बीच आंतरिक द्वंन्द्व से शुद्ध करने की जरूरत है । हमारा मन इस समाघात में शामिल होता है और साधारण रटकर सीखने से संतुष्ट नहीं है । यही कारण है कि आज बहुत सारे युवा वर्ग कलीसिया के परंपरा से सलाह लेना नहीं चाहते । विश्वास, आस्था को प्रेरित करने के लिए व्यक्तिगत सहभागिता एवं दृढ़ निश्चय उनके लिए अपरिहार्य है ।

हैं । पूरा बाईबल हमें इस विश्वास की ओर अग्रसर करता है कि पूर्णरूपेण पारदर्शी या लोकातीत ईश्वर मानवीय वास्तविकता में प्रवेश करते हैं और समझ की भाषा में हमसे बात करते हैं ।

ख्रीस्तीय विश्वास की क्या विशेषता है ? विश्वास, येसु के साथ हमारा जीवित संबंध है । इसे हम कभी समाप्त नहीं कर सकते हैं ।

एकात्मकता का प्रभु

हमलोग सभी सच्चाई की खोज करने वाले यात्री हैं । ईश्वर में विश्वास का यह मतलब नहीं कि हम सत्य को धारण करते हैं लेकिन हमें ईश्वर को जो सत्य है धारण करने देना चाहिए जो हमें सच्चाई की ओर ले जाएगाा । येसु अपने जीवन द्वारा ईश्वरीय प्रकाश का जो संचारण किया है वह हमेंशा नया ही रहेगा । पवित्र जीवन उसे और अधिक मनुष्य बना दिया ।(11) ईश्वर अपने-आपको मनुष्य के रूप में अभिव्यक्त करके मनुष्यों के साथ अपना विश्वास नवीन कर दिया । लोगों में हमारा विश्वास मजबूत कर दिया । तब से हम न तो संसार को और न ही अपने-आपको हताश कर सकते हैं ।

येसु हिंसक मृत्यु स्वीकार करके और हिंसात्मक जवाब न देकर ईश्वर के प्यार को ऐसे स्थानों में लाये जहाँ सिर्फ घृणा थी ।(12) क्रूस पर उन्होंने दैववाद और निष्क्रियता को अस्वीकार किया । निरर्थक और अबोध्य तकलीफ के बावजूद अंत तक प्यार किया । वह विश्वास करता रहा कि ईश्वर शैतान से बढ़कर है और मृत्यु का अंतिम शब्द नहीं है । उसका क्रूस पर दुखभोग अनन्त प्यार का चिन्ह बन गया है ।(13)

ईश्वर उसे पुनर्जीवित कर दिया । ख्रीस्त सिर्फ भूत के लिए नहीं वरण हमारे लिए प्रत्येक दिन में भी है । वह हमें पवित्र आत्मा प्रदान करते हैं जो हमें ईश्वरीय जीवन जीने में मदद करते हैं ।

हमारे विश्वास का केन्द्र बिंदु पुनर्जीवित प्रभु है जो हमारे बीच विद्यमान है और जिसका प्यार हम प्रत्येक के साथ है । उसकी ओर दृष्टिगोचर करने से हम गहराई से अपनी अस्तित्व को समझ सकते हैं ।

जब हम प्रार्थना में उसके प्रकाश की ओर देखते हैं तो स्वत: प्रकाश हमारे अंदर चमकने लगती है । ईश्वर का रहस्य हमारे जीवन का रहस्य बन जाता है । हमारे आंतरिक अंतर्विरोध एवं डर

विलुप्त नहीं हो सकते हैं पर ख्रीस्त, पवित्र आत्मा के माध्यम से हमारे चिंताओं में प्रवेश करते हैं ताकि उसका प्रकाश हमारे पापमय अंधकार को प्रकाशित कर दे ।(14)

प्रार्थना हमें एक साथ ईश्वर और संसार की ओर ले जाता है ।

मरियम मगदलेना की तरह, जिन्होंने पुनर्जीवित येसु को पास्का भोर में देखा, हम भी उसके सुसमाचार को दूसरों के साथ बाँटने के लिए बुलाये गये हैं ।(15) कलीसिया की बुलाहट पूरे विश्व में, सभी भाषा, सभी राष्ट्रों के स्त्री-पुरूषों एवं बच्चों को साक्ष्य देता है । यह ख्रीस्त का शरीर है जो पवित्र आत्मा द्वारा प्रमाणित है । यह एकात्मकता ईश्वर की उपस्थिति को दर्शाता है ।(16)

जब कलीसिया लगातार सुनती है,(17) चंगाई प्रदान करती है, मेल-मिलाप कराती है तब वह ज्योतिर्मय बन जाती है जो एक प्यार की घनिष्टता, दयालुता, संत्वाना और पुनर्जीवित प्रभु का निर्मल प्रतिबिम्ब को दर्शाता है । कलीसिया कभी दूरस्थ नहीं, रक्षात्मक नहीं, पर सभी परिशुद्धताओं से मुक्त, विश्वास को मनुष्यों के हृदय में चमकने देती है ।(18)

10) "सब लोगों से स्वतंत्र होने पर भी मैंने अपने को सबों का दास बना लिया है ।" (1 चरि० 9:19) पौलुस के इस कथन पर टिप्पणी करते हुए मार्टिन लूथर ने लिखा - "ख्रीस्तीय व्यक्ति स्वतंत्र है, सभी चीजों के मालिक है, वह किसी के अधीन नहीं है । ख्रीस्तीय आज्ञाकारिता से पूर्ण एक सेवक है ओर वह सबों के अधीन है ।"

(Luther, The freedom of a Christian)

11) येसु एक महान तपस्वी नहीं थे । वे चंगाई प्रदान करने जैसे चमत्कारिक कार्य तो किये लेकिन जिस क्षण में वे यह साबित कर सकते थे कि वह वही है जिसे ईश्वर ने भेजा है पर क्रूस पर ईश्वर की खामोशी थी, ऐसी खामोशी जिसे दुख सहने वाले सभी जानते हैं और वह उन्हें बांटने के लिए सहमत हो गये हैं । शिष्यों के लिए यह समझ पाना बहुत मुश्किल था कि येसु एक गरीब मसीहा थे । वे शायद यही आशा किये होंगे कि येसु उस समय के सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों को बदलेंगे । वे ये नहीं जानते थे कि येसु बुराई को जड़ से मिटाने आये ।

12) "जब उन्हें गाली दी गई तो उन्होने उत्तर में गाली नहीं दी, और जब उन्हे सताया गया तो उन्होने धमकी नहीं दी । उन्होंने अपने को उस पर छोड़ दिया जो न्यायपूर्वक विचार करता है " (1पेत्रुस 2:23)

13) जब हम निर्दोषों के अबोध्य दुख का सामना करते हैं तो हमेंशा घाटे में रहते हैं । एक सवाल, एक पुकार जो हमारे हृदयों को दहला देती है, मानव इतिहास में गूँजनते रहती है, वह है - ईश्वर कहाँ है? हमारे पास इसका कोई बना बनाया उत्तर नहीं है लेकिन हम अपने आपको ख्रीस्त को समर्पित कर सकते हैं जिन्होंने मृत्यु पर विजय पायी है और वह दुख में हमारे साथ है ।

'पृथ्वी का नमक' बनने की कोशिश

एकात्मकता का ईश्वर, ख्रीस्तीयों को अलग करने और एक पृथक समाज की स्थापना करने नहीं आये लेकिन वे उन्हें विश्वास और शाँति की खमीर की तरह मनुष्यों की सेवा करने के लिए भेजते हैं ।(19) ख्रीस्तीयों के बीच दृश्य एकात्मकता अपने आपमें एक उद्देश्य नहीं है लेकिन मनुष्यों के बीच "तुम संसार के नमक हो" का एक चिन्ह है ।(20)

अपने क्रूस और पुनरूत्थान के द्वारा ख्रीस्त सभी मनुष्यों के बीच एक नयी एकात्मकता की स्थापना की है । ख्रीस्त में मनुष्यों का विभिन्न गुटों में विभाजन समाप्त हो चुका है, उसमें हम सभी एक परिवार के सदस्य हैं ।(21) ईश्वर से मेल-मिलाप मनुष्यों के बीच मेल-मिलाप के लिए आवश्यक है ।(22)

लेकिन यदि नमक अपनी नमकीनता खो दे...इसका मतलब यह है कि हम ख्रीस्तीय बहुत बार ख्रीस्त के इस संदेश को धुंधला कर देते हैं । विशेषकर, यदि हम विभाजित हैं तो कैसे शाँति का विकिरण कर सकते हैं ?

आज हम इतिहास के ऐसे बिन्दु पर खड़े हैं जहाँ प्यार और शाँति के संदेशों को पुनर्जीवित करना है । क्या हमसे जो संभव हो करेंगे, ताकि ये गलतफहमियों से दूर अपने वास्तविक रूप में प्रकाशित हो सकें ?

क्या हम कुछ भी आरोप लगाये बिना, उनके साथ जो हमारे विश्वास के सहभागी नहीं हैं अपने हृदय से सच्चाई की खोज कर रहे हैं, यात्रा कर सकते हैं ?(23)

हमारी नयी एकात्मकता स्थापित करने एवं विश्वास की रास्तों को खोलने के प्रयास में बहुत सारी कठिनाइयाँ हैं और हमेंशा रहेंगी । कभी-कभी ये हमें पराजित करते प्रतीत होंगे । तब हम क्या करेंगे । क्या यह हमारी जिम्मेदारी नहीं है कि जो हमें व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से वेदनाएँ प्रदान करते हैं, उन्हें और अधिक प्यार करें ?

14) प्रार्थना, ईश्वर के प्रकाश का मनन-चिंतन भी एक श्रवण है । धर्मग्रंथ के माध्यम से हम यह समझते हैं कि ईश्वर हमसे वार्त्तालाप करते हैं और कभी-कभी हमसे सवाल भी करते हैं । कभी-कभी ख्रीस्त एक गरीब व्यक्ति के रूप में, जिन्हें हमारी प्यार की आवश्यकता है, प्रकट होते हैं और हमें बतलाते हैं - "मैं द्वार के सामने खड़ा होकर खटखटाता हूँ ।" (प्रकाशना ग्रंथ 3:20)

15) देखिए योहन 20:11-18

16) ब्रदर रोजर की अभिव्यक्ति है 'एकात्मकता का ईश्वर', इसी प्रकार बर्लिन का एक ईश-शास्त्री क्पमजतपबी ठवदीवमर्मिंतए जब वह जवान था, 21 वर्ष का था तब "समुदाय के रूप में ख्रीस्त का अस्तित्व" जैसी अभिव्यक्ति गढ़ी थी । उसने लिखा कि "ख्रीस्त के माध्यम से मानव जाति सचमुच ईश्वर की घनिष्टता में संघटित हो गए ।" (Bonhoeffer, Sanctorum Communio)

17) सुनने की धर्म-सेवा को, पुरूषों और स्त्रियों के द्वारा जो अपने को इसके प्रति समर्पित करते हैं, कलीसिया में सभी जगह कार्यान्वित करना चाहिए । ऐसे बहुत अयाजक हैं जो इस कार्य को कर सकते हैं और यह अभिषिक्त कार्य के सम्पूरक है ।

18) ब्रदर रोजर, च्मंबम वि भ्मंतज पद ।सस जैपदहे

19) यद्यपि इस सेवा का मतलब, उन सबसे जो समाज को अमानवीय करता है, के विपरीत दिशा में जाना है फिर भी संसार के विभिन्न संस्कृतियों एवं सभी ऐतिहासिक अवधि के साथ हमेंशा सम्मान और रचनात्मक संवेग के साथ जिम्मेदारी ली गयी है । "खमीर तब तक अपनी शक्ति नहीं दिखा समता जब तक उसे सने आटे के समीप नहीं लाया जाए और सिर्फ नजदीक ही नहीं वरण जब तक वह आटा के साथ पूर्ण रूप से विलीन न हो जाए ।"

20) मत्ती 5:13

21) येसु ने कहा - "जब मैं पृथ्वी के उपर उठाया जाऊँगा, तो सब मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित करूँगा ।" (योहन 12:32) प्रेरित पौलुस ने कहा- "अब न तो कोई यहूदी है और न यूनानी, न तो कोई दास है और न स्वतंत्र, न तो कोई पुरूष है और न स्त्री ।" (गलातियों 3:28)

22) देखिए, ऐफेसियों 2:14-18, ख्रीस्त ईश्वर की प्रजा और अन्य लोगों के बीच दीवार को ढह दिये हैं और अब ईश्वर सबों को प्राप्य है । एकात्मकता को सिर्फ एक परिवार या राष्ट्र तक ही सीमित नहीं रख सकते, यह किसी स्थानीय या विशिष्ट लाभ से परे है ।

23) उदाहरण के लिए, प्रश्नों का आदान-प्रदान, जैसे- मेरे जीवन का क्या मतलब है ? इसे कौन निर्देशित करता है ? कौन सा उद्देश्य मेरे अस्तित्व को एकीकृत करता है ?

Taizé Community
71250 Taizé, France
www.taize.fr